प्रकृति की सृष्टि के अन्तर्गत हमारे पिता, माता आदि के रूप में भासते हैं। वास्तव में ये सब श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश हैं। इस न्याय से माता, पिता आदि के रूप में प्रतीत होने वाले ये सब जीव श्रीकृष्ण के रूप हैं। श्लोक में आए **धाता** शब्द का अर्थ पोषण करने वाला है। केवल हमारे माता-पिता ही श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश नहीं हैं; अपितु उनको जन्म देने वाले माता-पिता आदि भी श्रीकृष्ण ही हैं। श्रीकृष्ण का भिन्न-अंश होने के कारण वस्तुतः जीवमात्र श्रीकृष्ण का रूप है। अतएव सम्पूर्ण वेद के लक्ष्य एकमात्र श्रीकृष्ण हैं। वेद से जो कुछ भी जिज्ञासा की जायगी, वह हमें क्रमशः श्रीकृष्ण के तत्त्व की ओर ही अग्रसर करेगी। जो तत्त्व अन्तर्शुद्धि के द्वारा स्वरूप को फिर प्राप्त करने में हमारी सहायता करे, वह विशेषरूप से श्रीकृष्ण का रूप है। इसके सदृश, जिसे सम्पूर्ण वैदिक सिद्धान्तों की जिज्ञासा हो, वह भी श्रीकृष्ण का भिन्न-अंश है, और इसलिए उनका रूप है। ऋक्, साम, यजुः और अथर्व—इन चारों वेदों के सब मन्त्रों में 'प्रणव' नामक चिन्मय नादब्रह्म, ॐ का प्रयोग होता है। अतः वह श्रीकृष्ण का स्वरूप है।

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्।।१८।।

गतिः =लक्ष्य; **भर्ता** =पालनकर्ता; **प्रभुः** =ईश्वर; **साक्षी** =शुभ-अशुभ का देखने वाला; **निवासः** =धाम; **शरणम्** =शरण; **सुहृत्** =परम अन्तरंग सखा; **प्रभवः** =सृष्टि; **प्रलयः** =प्रलय; **स्थानम्** =आधार; **निधानम्** =विश्राम-स्थल; **बीजम्** =बीज (कारण); **अव्ययम्** =अविनाशी।

अनुवाद

प्राप्त होने योग्य गति, सब का पालन करने वाला, परम ईश्वर, शुभ-अशुभ का साक्षी, परमधाम, शरण लेने योग्य, जीवमात्र का सुहृद्, उत्पत्ति-प्रलयरूप, सबका आधार, विश्राम-स्थल और अविनाशी बीज भी मैं हूँ।।१८।।

तात्पर्य

गति शब्द उस स्थान का वाचक है, जहाँ हम जाना चाहते हैं। यद्यपि जनसाधारण यह नहीं जानता, परन्तु सबके परम लक्ष्य श्रीकृष्ण ही हैं। श्रीकृष्ण को न जानने वाला निश्चित रूप से पथभ्रष्ट है; वह समझता है वह उन्नति कर रहा है, परन्तु श्रीकृष्ण रूपी लक्ष्य से रहित ऐसी उन्नति वास्तव में या तो एकांगी है अथवा भ्रमात्मक है। ऐसा होते हुए भी, बहुत से मनुष्य विभिन्न देवताओं को अपना गन्तव्य बना लेते हैं। ध्येय देवता के अनुसार दृढ़ साधन करने से उन्हें चन्द्रलोक, सूर्यलोक, इन्द्रलोक, महर्लोक आदि विभिन्न लोकों की प्राप्ति भी हो जाती है। किन्तु श्रीकृष्ण द्वारा रचित ये सब लोक श्रीकृष्ण के रूप होने पर भी वस्तुतः उनसे भिन्न हैं। भाव यह है कि ये लोक कृष्णशक्ति द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, इसलिए श्रीकृष्ण के रूप हैं; परन्तु इनके रूप में श्रीकृष्ण की पूर्ण प्राप्ति नहीं हो सकती। देवलोक की प्राप्ति श्रीकृष्ण की